SUN PAGE (3-4) 8 SEP.qxd 7/9/2024 5:32 PM Page 2

अजीत समाचार
बचपन
मैगज़ीन, रविवार, 8 सितम्बर, 2024 IV

भूकम्प और इसका जन्म

भूकम्प का नाम सुनते ही हर व्यक्ति एक क्षण के लिए कम्पित सा हो जाता है और सोचने पर विवश हो जाता है कि कहीं ऐसा न हो जाये कि हम रात में चिर निद्रा में हों और उस समय भूकम्प का तेज़ झटका आ जाये और फिर हम हमेशा के लिए सो जायें। देखा जाए तो इन्सान का यह सोचना बिल्कुल सच ही है क्योंकि भूकम्प है ही ऐसा दर्दनाक पहलू कि इसके तीव्र गति में होने से जान-माल का नुकसान हो जाता है। यहां तक कि पहाड़ों में बड़ी-बड़ी दरारें पड़ सकती हैं, इमारतें खंडित हो सकती हैं। अब यह भी जानना आवश्यक है कि भूकम्प होता क्या है?

हमारी पृथ्वी अनेक प्रकार की शैलों से मिलकर बनी है। यदि इनमें कभी दरार पड़ जाये तो पृथ्वी कांप उठती है। इसे ही भूकम्प कहा जाता है। जब शैलों में दरारें तेज़ गति से तथा ज्यादा पड़ती हैं और काफी समय लेती हैं तो भूकम्प बहुत खतरनाक होता है।

सामान्यत: तेज भूकम्प को ही भूचाल कहते हैं। पृथ्वी की शैलों में दरारें क्यों पड़ती हैं? इसके कई कारण हैं जैसे-किसी ठोस वस्तु का अचानक टूटना, विस्फोट द्वारा कम्पन, टैंकों, रेलगाड़ियों या भारी वाहनों के चलने से, कई मंजिला इमारतों के भार से, खदानों के ढहने, भूस्खलन आदि से, लेकिन तीव्र भूकम्प का कारण भूमि का भ्रंश या दरारें -तलों पर धंसना अथवा सरकना होता है।

जब पृथ्वी की शैलों या भूमिपटल पर तनाव बन जाता है तो वह शैल टूट जाती है। सामान्यत: इसकी चेतावनी कुछ समय पहले हल्के झटकों के रूप में होती है। इसे पूर्व प्रघात कहते हैं। फिर जिस स्थान पर पहले हल्का झटका आया था वह उग्रवम स्थान होता है, जिसे अभिकेन्द्र कहते हैं, वहां तीव्र झटका आता है। इसे उत्तर प्रघात कहा जाता है। इसे ही भूचाल कहा जाता है।

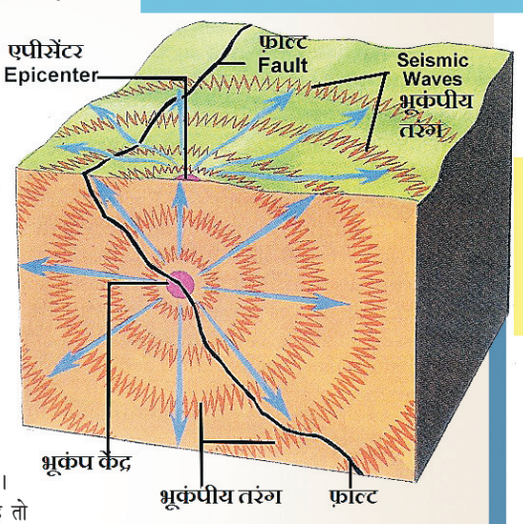

भूकम्प की तीव्रता को रिक्टर पर मापा जाता है। साधारणत: पृथ्वी पर छोटे-छोटे कम तीव्रता के भूकम्प हर पल आते रहते हैं लेकिन उनकी गति इतनी धीमी होती है कि महसूस नहीं किया जा सकता। इसी कारण धरती पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। जब कभी भी तीव्र भूकम्प आता है तो शैलों के टूटने पर ऊर्जा का उत्सर्जन भी होता है।

हरेराम शर्मा

यही ऊर्जा पृथ्वी को चीरते हुये बाहर निकलती है और विनाशलीला उत्पन्न कर देती है। यह ऊर्जा इतनी अधिक मात्र में होती है कि कई किलोमीटर दूर से ही इसकी चमक देखी जा सकती है।

आज यह ज्ञात हो चुका है कि पृथ्वी की प्लेटें 200 मिलियन वर्ष पूर्व एक साथ थी मगर अब यह अलग-अलग होकर कई भागों में बंट गयी हैं जैसे-उत्तरी अमरीका, दक्षिणी अमरीका, अफ्रीका, एशिया, अंटार्टिक आदि। भारतीय प्लेटें एशिया के अन्तर्गत हैं।

इन प्लेटों के अलग होकर उत्तरी दिशा में बढ़ने से ही हिमालय का जन्म हुआ है लेकिन यह आज से लगभग 65 मिलियन वर्ष पूर्व में बनना प्रारम्भ हुआ था। आज भी भारतीय प्लेटें 4 से 5 सेमी. प्रतिवर्ष 'तिब्बतन प्लेट' के नीचे जा रही हैं जिसके कारण हिमालय पर्वत 4 से 5 सेमी. प्रतिवर्ष और ऊंचा होता जा रहा है तथा इसके कारण भारतीय प्लेटों पर अधिक बल भी कार्य कर रहा है। इन्हीं बलों का परिणाम था 1993 में आया महाराष्ट्र का लातूर भूकम्प। **(उर्वशी)**

पहली चाबी कहां बनाई गई?

'दी दी, आज मम्मी अपनी अलमारी की चाबी रखकर कहीं भूल गईं। जब वह चाबी तलाश कर रही थीं और मैं भी उनका साथ दे रहा था तो मैं सोचने लगा कि पहली चाबी कहां बनायी गई होगी?'

'बड़ा दिलचस्प सवाल है। प्राचीन मिस्री पहले लोग थे जो दरवाज़ा खोलने के लिए एक प्रकार की चाबी का इस्तेमाल करते थे।'

'तो वह वास्तव में आज जैसी चाबी न थी।'

'हां। उनका ताला लकड़ी के बोल्ट से बना होता था जोकि एक स्लॉट में फिट होता था। स्लॉट के ऊपर लकड़ी के पिन कसे होते थे, जिन्हें टम्बलर्स कहते थे और उन्हें मूव किया जा सकता था। जब बोल्ट अपनी जगह पर सरक जाता तो बोल्ट में कटे हुए छेदों के अंदर लकड़ी के टम्बलर्स गिरा दिए जाते। बोल्ट मज़बूती से कसा रहता जब तक कि चाबी से टम्बलर्स को ऊपर न उठा दिया जाता।'

'यानी पहली चाबी, आज की चाबी सी दिखायी नहीं देती थी।'

'वह विशाल टूथब्रश की तरह दिखायी देती थी, जिसमें एक सिरे पर बालों की जगह पेग्स होते थे। जब चाबी को स्लॉट में डाला जाता तो पेग्स टम्बलर्स के नीचे चले जाते। चाबी को ऊपर उठाने से टम्बलर्स बोल्ट से बाहर आ जाते, जिन्हें फिर आसानी से वापस उनकी जगह पहुंचाया जा सकता था।'

'इसका मतलब तो यह हुआ कि मिस्री चाबी दरवाज़े की उस साइड पर ही इस्तेमाल की जा सकती जिस तरफ बोल्ट होता था।'

'सही समझे। फिर यूनानियों ने खोजा कि बोल्ट को दरवाज़े की दूसरी तरफ से भी गिराया जा सकता था।'

'वह किस तरह से?'

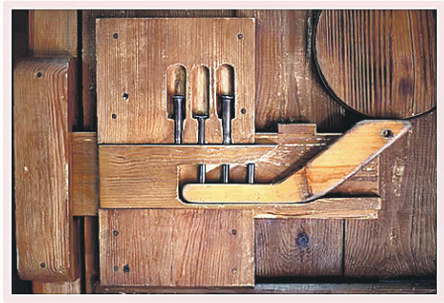

'वह दरवाज़े में बोल्ट के ऊपर के छेद में से चाबी को अंदर डालते जब तक कि उसकी टिप अंदर की तरफ बोल्ट के निशान को स्पर्श न कर जाती। यूनानी चाबी घुमावदार बार थी, शेप और साइज़ में जैसा कि किसान की दरांती होती है। इनमें से चाबियां तो तीन फीट से अधिक लम्बी होतीं और उन्हें कंधे पर लादकर चलना पड़ता था।'

'इसके बाद चाबी का विकास कैसे हुआ?'

'बाद में प्राचीन संसार में रोमन ताला बनाने वाले सबसे कुशल कारीगर बन गये। उन्होंने चाबी में ज़बरदस्त सुधार किया। रोमन चाबी में पेग्स विभिन्न शेप में कटे होते थे।

अब एक चोर को ताला खोलने के लिए ऐसी चाबी बनानी पड़ती थी जिसमें पिंस केवल सही पोजीशन में ही न हों बल्कि सही लम्बाई व सही आकार के भी हों। रोमनो ने छोटे ताले भी बनाये जिन्हें एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा सकता था। ऐसे ताले पैडलॉक्स कहलाते हैं, जिनकी चाबियां अक्सर अंगूठी की शेप की होतीं जिन्हें उंगली में पहना जा सकता था।'

-इमेज रिफ्लेक्शन सेंटर

पहेलियां

1. भूतल पर जल धार वहाती,
दो अक्षर का मेरा नाम।
झील हिमनद झरने से निकलूँ,
नाम बताओ भोलूराम।।

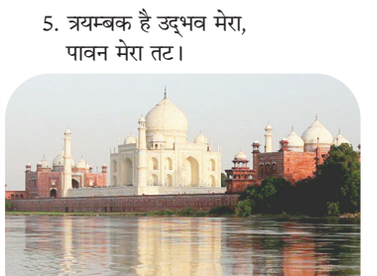

2. यमुनोत्री है उदभव मेरा,
तीन अक्षर का मेरा नाम।
गंगा की हूँ नदी सहायक,
नाम बताओ भोलूराम।।

3. उत्तर भारत में बहने वाली,
तीन अक्षर का मेरा नाम।
लखनऊ बसा है मेरे तट पर,
नाम बताओ भोलूराम।।

4. मध्य हटे को 'कारी' हूँ मैं,
प्रथम हटे तो बनती 'वेरी'।
झटपट मेरा नाम बताओ,
बच्चों क्यों करते हो देरी।।

5. त्रयम्बक है उद्भव मेरा,
पावन मेरा तट।

चार अक्षर का नाम हमारा,
बोलो तो झटपट।।

6. दक्षिण से उत्तर में बहती,
चार अक्षर का मेरा नाम।
सिहावा पर्वत उदभव मेरा,
नाम बताओ भोलूराम।।

-डा. कमलेन्द्र कुमार

उत्तर :— 1. नदी, 2. यमुना नदी, 3. गोमती नदी, 4. कावेरी नदी, 5. गोदावरी नदी, 6. महानदी।

बाल कहानी

धन से बढ़ कर नाम

नरेन्द्र देवांगन

प्राचीन काल में भारत के एक नगर में शिवरतन नामक एक पंडित रहते थे। वह बहुत विद्वान थे। लेखन उनका व्यवसाय था। उन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा धन ही नहीं, यश भी कमाया था। उनकी रचनाएं देश प्रेम, चरित्र निर्माण और मानवता आदि गुणों से ओतप्रोत थीं।

उस समय वीरसिंह नामक एक भयंकर डाकू का आतंक चारों तरफ छाया हुआ था। लोग उसके नाम से थर-थर कांपते थे। किसी को भी दिन-दहाड़े लूट लेना और कत्ल कर देना उसके बाएं हाथ का खेल था। दया उसके हृदय में नाममात्र भी नहीं थी।

एक दिन अपने गिरोह के साथ वीर सिंह ने शिवरतन के घर पर धावा बोल दिया। वह अपनी बंदूक पंडित जी की तरफ करते हुए खड़ा हुआ।

'पहले जलपान कर लीजिए ठाकुर साहब, ऐसी भी क्या जल्दी है?' शिवरतन ने शांत भाव से कहा।

'मैं फालतू बातें नहीं सुनना चाहता। मैं जो कह रहा हूं, वही करो,' वीरसिंह ने कड़कती आवाज में कहा।

'यह लीजिए,' तिजोरी की चाबी फेंकते हुए शिवरतन ने कहा, 'तिजोरी के पहले खाने में

सोना व आभूषण हैं, दूसरे खाने में जवाहरात हैं और तीसरे खाने में रोकड़ वगैरह हैं। चांदी यहां जमीन में दबाकर रखी गई है। जितनी चाहे ले लो।'

वीरसिंह के साथियों ने देखते ही देखते सारा माल तुरंत अपने कब्जे में कर लिया।

शिवरतन को लूटकर जब वीरसिंह चलने को हुआ, तब पंडित जी ने कहा, 'ठाकुर साहब, जलपान तो कर ही लेते। यहां जल भी है और मौका भी है। फिर न जाने कहां मौका लगे।'

'तुम्हें माल जाने का गम नहीं है, पंडितजी,' वीर सिंह बोला, 'आज तक हमने इतनी डकैतियां डालीं पर किसी ने भी इस तरह हंसी-खुशी अपना माल नहीं दिया। कहीं किसी को मारा-पीटा, कहीं डराया-धमकाया, कहीं कत्ल भी करने पड़े लेकिन आपने सारा माल स्वेच्छा से दे दिया। मुझे ताज्जुब हो रहा है।'

'मैंने अपने जीवन में खूब धन और यश कमाया है,' शिवरतन ने गर्व से कहा, 'अपनी एक-एक रचना से मुझे अपार धन प्राप्त हुआ है। अभी मैंने 'पारसमणि' की रचना की है। उससे अपार धन और नाम की प्राप्ति होगी। मेरी रचनाओं की पाठक बड़ी बेसब्री से प्रतीक्षा करते हैं। मैं धन के लिए नहीं, नाम के लिए जीता हूं। नाम धन से बढ़कर है।'

'यह पारसमणि क्या है?' वीरसिंह ने पूछा।

'पारसमणि मेरी नई रचना है जिसमें भारत ने प्राचीन आदर्श महापुरूषों के चरित्र, त्याग और उत्तम आचरणों का वर्णन किया गया है। इसके अध्ययन से पाठक अपना जीवन उन जैसा ही महान बना सकते हैं। ईश्वर की बनाई हुई पारसमणि लोहे को सोना बना देती है, पर यह पारसमणि मनुष्य को महापुरूषों जैसा बनाएगी,' पंडितजी ने कहा।

तब तो हम यह पारसमणि ही लेंगे, वीरसिंह बोला, 'हमें तुम्हारा माल नहीं चाहिए। हम आज से डकैती भी नहीं डालेंगे।'

पंडितजी मुस्कुराते हुए बोले, 'पारसमणि भी ले जाओ वीरसिंह और माल भी।'

वीरसिंह व उसके साथियों पर पंडितजी के व्यवहार व पारसमणि पुस्तक का इतना असर पड़ा कि वे माल वहीं छोड़कर वापस चले गए और उसी दिन से उन्होंने डकैती डालना भी छोड़ दिया। **(उर्वशी)**

बर्फ से निकलने वाली किरणें गर्म होती हैं, ठंडी नहीं!

मेरे एक दोस्त बहस करने लगे कि जिस तरह गर्म किरणें होती हैं, उसी तरह ठंडी किरणें भी होती हैं। उनका तर्क था कि जिस तरह एक जलते स्टोव से गर्म किरणें निकलती हैं, उसी तरह बर्फ की सिल्ली से भी ठंडी किरणें निकलती हैं। क्या इसका अर्थ यह नहीं है कि ठंडी चीज़ों से ठंडी किरणें वैसे ही निकलती हैं जैसे गर्म चीज़ों से गर्म किरणें निकलती हैं?

मेरे दोस्त का यह कहना पूर्णत: गलत है। ठंडी किरणों का कोई वजूद है ही नहीं। यह बात सही है कि बर्फ के पास रखी चीज़ें ठंडी हो जाती हैं, लेकिन ऐसा तथाकथित ठंडी किरणों के कारण नहीं होता है बल्कि इसलिए होता है क्योंकि बर्फ से निकलने वाली गर्माहट की तुलना में गर्म चीज़ें स्वयं अधिक गर्माहट निकालती हैं। बर्फ से अधिक गर्म चीज़ जितनी हीट निकालती है उससे कम हीट हासिल करती है। चूंकि अंदर आने वाली हीट की मात्रा बाहर निकलने वाली हीट की मात्रा से कम होती है इसलिए वह चीज़ ठंडी हो जाती है। इसका अर्थ यह हुआ कि बर्फ से जो किरणें निकलतीं हैं वह भी गर्म ही होती हैं न कि ठंडी। इस तथ्य को एक प्रयोग से समझिये।

हालांकि इस प्रयोग में ऐसा लगता है कि ठंडी किरणें भी होती हैं, लेकिन यह वास्तविकता नहीं है।

कारण प्रयोग के बाद बताया जायेगा। एक लम्बे से हॉल में बड़े-बड़े कांकेव आइने एक-दूसरे के सामने टांग दीजिये। फिर एक आइने के फोकस में हीट का एक शक्तिशाली स्त्रोत रख दीजिये। उससे जो किरणें निकलेंगी वे पहले आइने से दूसरे आईने में प्रतिबिम्बित होंगी, जो उन्हें फिर फोकस करेगा। अब इस फोकस के सामने जो काले कागज़ का टुकड़ा रखा होगा उसमें आग लग जायेगी। इस प्रयोग से गर्म किरणों का अस्तित्व साबित हो जाता है।

लेकिन अगर हम पहले आइने के फोकस में बर्फ की सिल्ली या बड़ा टुकड़ा रखते हैं और दूसरे आइने के फोकस में थर्मामीटर रखते हैं तो हम देखते हैं कि थर्मामीटर में तापमान गिर जाता है। क्या इसका अर्थ वास्तव में यह है कि बर्फ ठंडी किरणें निकालती है जो आइने से प्रतिबिम्बित होकर थर्मामीटर पर फोकस करती हैं?

नहीं, बिल्कुल नहीं। ठंडी किरणों

कुंवर चांद खां

के होने की रहस्यमय थ्योरी एकदम बोगस है। बात वही है कि रेडिएशन के कारण थर्मामीटर बर्फ से हासिल होने वाली गर्माहट से अधिक गर्माहट बाहर निकालेगा। इस वजह से तापमान गिर या कम हो जायेगा। इसका अर्थ यही है कि ठंडी किरणों के अस्तित्व को स्वीकारने का कोई ठोस कारण नहीं है। प्रकृति में ठंडी किरणें जैसी कोई चीज़ है ही नहीं। सभी किरणें एब्सोर्बिंग ऑब्जेक्ट को ऊर्जा प्रदान करती हैं। इस बीच जो चीज़ें किरणें निकालती (एमिट) हैं वे ठंडी हो जाती हैं।

क्या आप जानते हैं?

1. हिमालय प्रदेश प्रदेश में कुल कितने राष्ट्रीय उद्यान हैं?
2. हिमाचल प्रदेश को भारत का बागवानी राज्य किसके उत्पादन की वजह से कहते हैं?
3. हिमालय प्रदेश का राजकीय पुष्प क्या है?

4. हिमालयन नेशनल पार्क किस ज़िले में है?
5. हिमाचल प्रदेश में कटोज राजपूत वंश का संस्थापक कौन था?
6. हिमालय प्रदेश की लाहौल घाटी के लोकप्रिय नृत्य कौन-से हैं?
7. हिमाचल प्रदेश में लघु उद्योग की सर्वाधिक इकाइयां किस ज़िले में स्थित हैं?
8. हिमाचल प्रदेश के सोलन ज़िले में किस स्थान पर निजी क्षेत्र में 50 टन का वनस्पति घी प्लांट स्थापित है?
9. हिमाचल प्रदेश के किस नगर को छोटा ल्हासा कहा जाता है?

-जीवन धीमान

उत्तर :— 1. पांच, 2. सेब के, 3. गुलाबी बुरांश, 4. कुल्लू, 5. सुशर्मा, 6. शन व शाबू, 7. कांगड़ा, 8. नालागढ़, 9. धर्मशाला।

दुनिया के हर हिस्से में पाये जाने वाले टोड

टोड एक उभयचर है और देखने में पूरी तरह मेंढक जैसा मालूम पड़ता है। वास्तव में मेंढक और टोड दोनों शब्द एक-दूसरे से इतना घुल मिल गए हैं कि इन्हें अलग नहीं किया जा सकता। मेंढक और टोड का वर्गीकरण रीढ़ की हड्डी की संरचना के आधार पर किया जाता है। इसके साथ ही इन दोनों में दो प्रमुख अंतर और हैं। मेंढक की त्वचा नम और चिकनी होती है तथा ये हमेशा पानी में या पानी के पास रहते हैं, जबकि टोड की त्वचा खुरदरी होती है एवं इनके शरीर पर गुमड़े होते हैं तथा ये प्राय: जलस्रोतों से दूर शुष्क स्थानों पर रहते हैं।

टोड आस्ट्रेलिया और मेडागास्कर को छोड़कर पूरे विश्व में पाया जाता है। इसकी दो सौ से अधिक जातियां हैं। कुछ जातियों के टोड मेंढक के समान लम्बी छलांगें भी लगा सकते हैं। प्राय: सभी टोडों की शारीरिक संरचना और आदतें लगभग एक जैसी होती हैं। टोड किसी एक विशेष स्थान पर रहने वाला जीव नहीं है। यही कारण है कि यह पूरे विश्व में फैल गया है। सामान्यतया टोड खुले स्थानों पर मिलते हैं और इसके साथ ही जंगलों में भी। कुछ टोड तो रेगिस्तानी क्षेत्रों में भी देखने को मिल जाते हैं।

अमरीका का सामान्य टोड उत्तर अमरीका के पूर्व के लगभग आधे भाग में पाया जाता है। यह बाग-बगीचों से लेकर पहाड़ी क्षेत्रों तक में मिलता हैं। सामान्य टोड की लंबाई 7.5 सेंटीमीटर से 12.5 सेंटीमीटर तक एवं रंग लाल कत्थई होता है। दक्षिण अमरीका का सामान्य टोड एक सीमित क्षेत्र में ही पाया जाता है। अफ्रीका में 21 जातियों के टोड पाए जाते हैं। इनमें सामान्य टोड प्रमुख हैं। इसे अफ्रीका में चौकोर निशान वाला टोड कहते हैं। यह केप से लेकर मिस्र तक पाया जाता है। दक्षिण अफ्रीका के सामान्य टोड की लंबाई लगभग 10 सेंटीमीटर होता है एवं शरीर का रंग हल्का होता है तथा इस पर गहरे कत्थई रंग के धब्बे होते हैं। सामान्य टोड का समागमकाल अगस्त से आरंभ होता है और गर्मियों के अंत तक चलता है। इसकी मादा चौबीस हजार तक अंडे देती है। अंडे मात्र चार दिन में फूटते हैं और इनसे टेडपोल बाहर निकल आते हैं तथा एक माह में ये वयस्क हो जाते हैं।

दक्षिण अफ्रीका में ही विश्व का एकमात्र ऐसा टोड पाया जाता है जो जंगल में रहता है। इसे ब्यूफाएनोटिस कहते हैं। यह पानी से दूर रहता है तथा जमीन पर अंडे देता है। इसके अंडे काफी बड़े होते हैं और इनका विकास भी जमीन पर ही होता है। विश्व के सबसे छोटे टोड दक्षिण अफ्रीका में मिलते हैं। इनमें धारीदार पहाड़ी टोड प्रमुख है। यह बड़ा तेज और फुर्तीला होता है। धारीदार टोड की लंबाई लगभग 3 सेंटीमीटर तथा रंग कत्थई होता है। पिग्मी टोड इतना छोटा होता है कि इसकी विष ग्रन्थियां तक ठीक से दिखाई नहीं देतीं। इसके अंडों का बड़ी तीव्र गति से विकास होता है और अंडे देने के मात्र 16 दिन बाद 6 मिलीमीटर लंबे टोड तैयार हो जाते हैं। उत्तर अमरीका का ओक टोड विश्व का सबसे छोटा टोड है। ओक टोड की लंबाई 2 सेंटीमीटर से 3.2 सेंटीमीटर के

के.पी. सिंह

मध्य होती है।

टोड की अनेक जातियां मलाया प्रायद्वीप और बोर्नियो में भी मिलती हैं। इनकी त्वचा वास्तविक टोड के समान खुरदुरी होती है,किन्तु पैरों में झिल्लियां पायी जाती हैं।

दक्षिणी एशिया में पाए जाने वाले नेक्टोफाइंग वंश के टोड की आदतें वास्तविक टोड से भिन्न होती हैं। इनकी उंगलियों के सिरों पर छोटी-छोटी चूषक डिस्क होती हैं, जिनकी सहायता से ये झाड़ियों और छोटे-छोटे वृक्षों पर चढ़ जाते हैं। अफ्रीका में पाए जाने वाले नेक्टोफ्लाईनाइड्स वंश की दो जातियों के टोड सर्वाधिक विलक्षण होते हैं। इनके अंडों एवं टेडपोल का विकास मादा के शरीर के भीतर ही होता है, अर्थात् मादाएं अंडे न देकर बच्चों को जन्म देती हैं। इंग्लैंड के वास्तविक टोड का जीव वैज्ञानिक नाम ब्यूको-ब्यूको है। यह इंग्लैंड का सामान्य टोड है। इसमें नर की लंबाई 6.2 सेंटीमीटर तक और मादा की लंबाई लगभग 8.7 सेंटीमीटर होती है। कुछ गर्म क्षेत्रों में भोजन की अधिकता वाले स्थानों 13.7 सेंटीमीटर तक लंबे टोड मिल जाते हैं। इंग्लैंड के सामान्य टोड का रंग हल्का कत्थई होता है तथा कभी-कभी इस पर गहरे कत्थई, काले या लाल रंग के धब्बे भी देखे जा सकते हैं।

विश्व का सबसे बड़ा टोड ब्राजील का रोक्कोगो टोड है। यह 25 सेंटीमीटर से भी अधिक लंबा होता है। भारत में वास्तविक टोड बहुतायत में पाया जाता है।

-इमेज रिफ्लेक्शन सेंटर

थैला

ननिहाल से जब भी नानू आते,
थैले में कितनी चीजें लाते।
भले थोड़ा सा होता मैला,
मगर भाता है मुझको थैला।
कचरा नहीं फैलाता थैला,
पर्यावरण बचाता थैला।
आजकल सब पॉलीथीन अपनाएं,
पॉलीथीन में सभी चीजें लाएं।
पॉलीथीन को फेंक आते,
खाकर जिन्हें पशु मर जाते।
पॉलीथीन करता है हानिए
धरती में रिसने से रोके पानी।
कपड़े का थैला इस्तेमाल करें,
पर्यावरण की संभाल करें।
कचरा कूड़ेदान में ही डालें,
स्वच्छता को दिल से अपना लें।

-हरिन्दर सिंह गोगना
मो-98723 25960